International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 28-11-2022, Accepted: 14-12-2022, Published: 30-12-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 15-17

स्त्री शिक्षा एवं सशक्तिकरण में डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी का योगदानः दृष्टिगत अवलोकन

डॉ. शैला पी. चव्हाण
सहयोगी प्राध्यापक, ॲड. व्ही. जी. हांडे शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, नाशिक, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
भारतीय समाज तथा विश्व के साहित्यकारों पर भी डॉ. बाबासाहब अंबेड़कर के विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। शिक्षा ही मानव जीवन का उध्दार है ऐसा बाबासाहब मानते थे। डॉ. आंबेडकर दर्शन को अपनी अभिव्यक्ति का आधार मानकर चलने वाले दलित रचनाकारों ने अपना अलग रास्ता चुना। वर्ण–व्यवस्था, सामंतवाद, ब्राम्हणवाद, पूँजीवाद के विरूध्द दलित चेतना से लैस अपने वैचारिक आधार को फुले, शाहू, आंबेडकर, बुध्द से जोड़ने की प्रवृत्तियों ने दलित साहित्य को वैचारिक शक्ति प्रदान की। डॉ. बाबासाहब अंबेडकर मानववंशशास्त्र के गाढे अभ्यासक थे उन्होंने स्त्रियों की सामाजिक समस्याओं का गहराई के साथ अध्ययन किया था। डॉ. भारतीय स्त्रियों के कल्याण के लिए उन्होंने उनकी तबीयत ठीक ना होते हुए भी हिंदू कोड बिल का मसुदा तैयार करने के लिए रात–दिन काम किया था। हिंदू विवाह कायदा – 1955, हिंदू वारसा हक्क कायदा – 1956, हिंदू अज्ञान एवं पालकत्व कायदा – 1956, हिंदू दत्तक एवं पोटगी कायदा – 1956 आदि इन कायदों का निर्माण यह भारत के इतिहास की एक क्रांतिकारी घटना थी जिसके मूल में थे डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी के स्त्रियों के संबंध में अधिकारों विषयक विचार जिन्हें मानव समाज भूला नहीं पायेगा।

मूल शब्दः डॉ. आंबेडकर, स्त्री अधिकार, सामाजिक क्रांति, स्त्री शिक्षा, महिला परिषद

प्रस्तावना
डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर जी का तत्वज्ञान, अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, कायदा, इतिहास, समाजशास्त्र आदी विविध विषयों का उनका गाढा अभ्यास था। जीवन भर कठीन ज्ञान साधना कर के वे विधीतज्ञ, अर्थतज्ञ, राज्यतज्ञ, समाजतज्ञ बने। उन्होंने दलित, शोषित, पीडित, महिला इनके उध्दार के लिए, उन्नति के लिए अपने पुण्यकम से आत्मघट को भरा। वे न्याय, समता, बंधुता और स्वातंत्र्य इन आधारभूत तत्वों के पुरस्कर्ता थे। डॉ. अंबेडकर गौतम बुध्द, संत कबीर और महात्मा जोतिबा फुले इनको अपना गुरू मानते थे। डॉ. अंबेडकर जी के कार्यो के कारण उन्हें भारत का सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया गया भारतरत्न।

उद्देश्य
1. डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी के शिक्षा संबंधी कार्यों को जानना।
2. डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी के महिला शिक्षा संबंधी विचारों को जानना।
3. डॉ. बाबासाहब के कार्यों के पीछे के इतिहास को जानना।
4. डॉ. बाबासाहब के विचारों का महिलाओं के जीवन पर हुए प्रभाव को जानना।

जानकारी संग्रह के स्त्रोत
प्रस्तुत शोध कार्य के लिए संदर्भ ग्रंथ, समाचारपत्र, आंतरजाल, दूरदर्शन आदि स्त्रोतों का आधार लिया गया है।

अनुसंधान पद्धति
प्रस्तुत शोध कार्य के लिए विश्लेषणात्मक एवं सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया आहे।

शोधविषय का महत्व
डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी के स्त्रियों के संबंध में अधिकारों विषयक विचार जिन्हें मानव समाज भूला नहीं पायेगा। भारत के इतिहास में डॉ. बाबासाहब के विचारों के प्रभाव को जानना। डॉ. बाबासाहब अंबेडकर मानववंशशास्त्र के गाढे अभ्यासक थे उन्होंने स्त्रियों की सामाजिक समस्याओं का गहराई के साथ अध्ययन किया था। अध्ययन करने पर उन्हे पता चला की स्त्रियों की सामाजिक स्थिति बहुत ही खराब है और औरतों में ज्ञान का अभाव हैं। स्त्रियों का पुरूषों के समान जीने का कोई अधिकार नहीं था। डॉ. बाबासाहब अंबेडकर कहते है कि, मनु ने औरतों को शिक्षा का अधिकार नकार दिया था इस कारण वह औरतों पर अत्याचार का कारण भी बना हैं। इतना ही नहीं मनु ने औरतों को शिक्षा के साथ–साथ आत्मिक, अध्यात्मिक कार्यो के सहभाग को भी नकारा हैं। इससे ज्यादा दूसरा सामाजिक अन्याय और क्या हो सकता है ? शिक्षा ही मानव जीवन का उध्दार है ऐसा बाबासाहब मानते थे। दलित समाज के लोग बाबासाहब डॉ. अंबेडकर की शिक्षाओं को अपनाकर और पढ़–लिखकर आज कहाँ से कहाँ पहूँच रहे हैं। आप लोग भी उनके बताए मार्ग पर चलना शुरू कर दें, अपने बच्चों के हाथ से झाड़ू छीनकर दूर फेंक दो और कलम थमा दें, देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना व पाखंड आदि से दूर रहो।1 भारत में कई सालों से औरतें हमेशा पुरूषों की दासी के रूप में ही अपना जीवनयापन करती दिखाई देती है।

शोध विषय विवेचन

सन 1936 में डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी ने जो भाषण किया था उसमें उन्होंने देवदासी, मुरळी और जोगिनों को अपना व्यवसाय छोडकर सम्मान के साथ जीने की सलाह दी थी। इस कारण उस समय कई देवदासी, मुरळी और जोगिनों ने अपना व्यवसाय छोड समाज में सम्मान के साथ जीने की शुरूवात की थी। यही काम भगवान बुध्द के उपदेश द्वारा प्रभावित होकर अपने जिने का अधिकार तथा शिक्षा का अधिकार पाने हेतु आम्रपाली जैसी गणिका, विमल जैसी वेश्या, पुर्णिका जैसी दासी और चंदा जैसा भिखारण जाग्रत हुई थी। इसलिए उनको बौध्द संघ में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी।

डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी को यह कतई पसंद नहीं था की औरतें सिर्फ घर का काम और बच्चों को संभालने का काम करें। औरतों की यही स्थिति बदलने के लिए डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी ने कई बार प्रयास किए। भारतीय स्त्रियों के कल्याण के लिए उन्होंने उनकी तबीयत ठीक ना होते हुए भी हिंदू कोड बिल का मसुदा तैयार करने के लिए रात–दिन काम किया था। 5 फरवरी 1951 को हिंदू कोड बिल संसद में प्रस्तुत किया गया। उसमें उत्तराधिकार का अधिकार, पालनपोषण, विवाह, घटस्फोट, दत्तक ऐसी कई बाते थी जिन पर विस्तार के साथ चर्चा की गई थी। लेकिन कुछ समाज के विद्रोहीयों के कारण यह बिल पास ना हो सका जिस कारण डॉ. बाबासाहब अंबेडकर ने अपने कायदेमंत्री इस पद से इस्तिफा दे दिया।[3]

डॉ. अंबेडकर जी के किए प्रयास निरर्थक नहीं हुए। बाद में पंडित नेहरू जी ने इसी मसुदे को चार भागों में विभाजित कर उन्हें समय–देर–समय मंजूरी दिला दी गई। जैसे – हिंदू विवाह कायदा – 1955, हिंदू वारसा हक्क कायदा – 1956, हिंदू अज्ञान एवं पालकत्व कायदा – 1956, हिंदू दत्तक एवं पोटगी कायदा – 1956 आदि इन कायदों का निर्माण यह भारत के इतिहास की एक क्रांतिकारी घटना थी जिसके मूल में थे डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी के स्त्रियों के संबंध में अधिकारों विषयक विचार जिन्हें मानव समाज भूला नहीं पायेगा। डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी दैव, देव, नसीब, ऐसी बातों का विरोध करते थे। उनका ऐसा मानना था कि मनुष्य अपने कम के द्वारा अपने भविष्य को उज्वल बना सकता है। लडकों के साथ–साथ अगर लडकियाँ भी पढे तो शायद वह अपने बच्चों को इन बातों से दूर कर पायेंगी। इसलिए वे स्त्री शिक्षा के पुरस्कर्ता भी थे।

डॉ. बाबासाहब का मानना था की, माँ–बाप अपने बच्चों को जन्म देते हैं, कम नहीं देते ऐसा कहना सही नहीं हैं। माँ–बाप अपने बच्चों के भविष्य को सही दिशा दे सकते हैं। यह बात अगर समाज में फैल जाए की लडकों के साथ लडकियों की शिक्षा के लिए प्रयास किए गए तो हमारे समाज की उन्नति अधिक गति से होगी।4 स्त्री एवं शुद्रों के जीवन में ज्ञान की पहली ज्योति फैलायी महात्मा फुले जी ने। उन्होंने पुना में 1848 में पुणा में भांबुडी में लडकियों के लिए पहली स्कूल खोली तथा 1851 में जुना गंजपेठ यहाँ पर शुद्रों के लिए पहली स्कूल की स्थापना की। डॉ. बाबासाहब अंबेडकर महात्मा जोतिबा फुले को अपना गुरू मानते थे इसकारण शुद्रों एवं औरतों की शिक्षा की जिम्मेदारी बाबासाहब ने ली।

डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जब उच्च शिक्षा पूरी कर भारत वापस आए तब उन्होंने कामाठीपुरा, सातरस्ता, परळ (दगडी चाल), लोखंडी चाल, और जहाँ कही शुद्रो की रहने की जगह थी उनका मुआयना किया तथा वहाँ पर उपदेश भी किए। वह जब भाषण करते तो उन्हें एक बात दिखाई दी की महिलाओं की संख्या कम हैं या नहीं है। तो वे अपने भाषण के द्वारा समझाते की, औरतों का उध्दार ही समाज का उध्दार है इसलिए औरतों ने स्वाभिमान के साथ रहना सिखना चाहिए।

अपने समाज की औरतें भी सवर्णों की तरह रहनी चाहिए इसलिए उन्हें पढाना होगा इसकारण डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी ने औरंगाबाद में मिलींद महाविदयालय स्थापन कर वहाँ लडकियों को प्रवेश दिया। लडकियों को आने–जाने में तकलिफ ना हो इसलिए बस की सेवा भी उन्होंने मुफ्त में करा दी। उनका मानना था कि अगर लडकियाँ नही पढेगी तो देश का 50 समाज अशिक्षीत और अज्ञानी रह जायेगा। समाज के समतोल विकास के लिए स्त्री शिक्षा के महत्व को उन्होंने रेखांकित किया हैं। उन्होंने राज्यघटना के माध्यम से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से स्त्री शिक्षा का पुरस्कार किया है। उन्होंने मुंबई, औरंगाबाद, पंढरपुर यहाँ पर अनेक शिक्षा संस्था तथा वस्तीगृहों की स्थापना कर स्त्री शिक्षा विषयक अपने सपनों को साकार किया हैं।

डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के गुरू महात्मा जोतिबा फुले औरतों के संदर्भ में कहते है कि, मानव समाज को बुध्दि का वरदान प्राप्त है। स्त्री पुरूष से बुध्दि में कम या ज्यादा ऐसा कुछ नहीं हैं। विश्व की सभी धर्मों की किताबें पुरूषों ने ही लिखी हैं। उन्होंने स्त्रियों के निर्सगदत्त अधिकार छिन लिए है और स्त्री को गुलाम बना लिया हैं। सही अर्थ में स्त्री पुरूष से भी अधिक श्रेष्ठ हैं। बच्चों को जन्म देने का निर्सगदत्त अधिकार उसे ही मिला है इसलिए वह पुरूषों से भी अधिक श्रेष्ठ हैं।5 मनस्मृति ब्राम्हणी समाज व्यवस्था का एक अलग स्वरूप दर्शाती हैं। वह एक ग्रंथ ही नहीं एक कायदेसंहिता के तौर पर अपना अस्तित्व बनाए हुए थी। मनुस्मृति में विवाह, वारसा, विधवा पुर्नविवाह, सहभोजन, स्त्रियों के आदर्श व्यवहार, स्त्रियों का समाज में स्थान आदि कई कायदे मिलते है, जो ब्राम्हण वर्ग ने तैयार किए हुए थे।

डॉ. बाबासाहब के मतानुसार यह सब कायदे स्त्रियों पर अन्याय–अत्याचार करनेवाले तो है ही साथ ही उन्हें तुच्छ एवं पशुवत समझने वाले हैं। शुद्रो के साथ–साथ मनुस्मृति में स्त्रियों को भी हीन समझने के कारण डॉ. बाबासाहब मनुस्मृति के विरोध में गए और उन्होंने 1927 को महाड के चवदार तलाव के पास मनुस्मृत का दहन किया। इस दिवस का महत्व तथा प्रेरणा बाकी औरतों तक पहुँचने के लिए 25 दिसंबर यह दिवस भारतीय स्त्री मुक्ति दिवस के रूप में मनाने की बात आगे आयी। भारत में सामजिक समता का युग की शुरूवात संविधान से शुरू होती है।

भारतीय संविधान के 14 कलम के तहत कायदे के सामने स्त्री–पुरूष समान है। भारत में पुरूषप्रधान संस्कृति होने के कारण स्त्री को दुय्यम स्थान दिया जाता है। स्त्री को जब तक शिक्षा नहीं मिलेगी तब तक वह खुद को पुरूष की दासी के रूप में ही स्थापित हो जीती रहेगी। मानव समाज को अपमानित करने वाली और देश को दुबला बनाने वाली अन्यायपूर्ण रचना को बदलने के लिए शिक्षा यही एक क्रांति की सही पहल होगी ऐसा डॉ. बाबासाहब को लगता था। इसलिए उन्होंने शिका, संघटित व्हा, संघर्ष करा ऐसा नारा दिया।

डॉ. बाबासाहब अंबेडकर स्त्री शिक्षा को प्रेरणा मिले इसलिए आखिल भारतीय महिला परिषदों का आयोजन कर वहाँ स्त्री शिक्षा पर जोर देनेवाले मुद्दों पर चर्चा की जाती थी। आखिल भारतीय बहिष्कृत हितकारिणी परिषद में ऐसा मुद्दा उठाया

गया कि, जिस जगह स्कूल होगी वहाँ के लोगों ने लडकों के साथ लडकियों को भी शिक्षा देनी चाहिए। इसलिए वहाँ के पंचों को सख्त ताकीद देनी चाहिए और न मानने पर दोषारोप दाखल कराने चाहिए। इ. स. 1927 के महाड में हुए भाषण में डॉ. अंबेडकर कहते है कि, लडकियों को भी शिक्षा मिलनी ही चाहिए। ज्ञान एवं विदया यह महत्वपूर्ण चीजें क्या सिर्फ पुरूषों के लिए ही नहीं हैं, वह औरतों के लिए भी आवश्यक हैं। हमें अगर हमारी आनेवाली नस्लें को सुधारना है तो लडकियों को पढाना ही होगा।

16 जून 1936 को डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जी ने मुंबई के दामोदर हॉल में स्त्रियों के परिषद में बहुत सुंदर बात कही थी कि, आपको पता होना चाहिए की, औरत जात समाज का एक सुंदर गहना हैं। हर समाज स्त्री के चरित्र को सबसे ज्यादा महत्व देता है, मान देता है। अपनी होनेवाली औरत एक सुंदर और उत्तम कुल में जन्मी हो ऐसा हर किसी को लगता है तथा इसलिए प्रयास भी करता हैं। क्योंकि उसको पता होता है कि, अपने बच्चों, अपने परिवार तथा अपने कुल का उध्दार स्त्री के शील पर अवलंबित हैं।

निष्कर्ष

1. डॉ. बाबासाहब अंबेडकर भारतीय समाज के इन सभी घटकों के लिए
2. मसीहा थे जो दबे हुए है, सदियों से अन्याय–अत्याचार को सह रहे थे।
3. डॉ. बाबासाहब का यह भी मानना था कि शिक्षा मिलना जरूरी है लेकिन शिक्षा के साथ–साथ इन्सान का शीलवान होना भी जरूरी है वे कहते है कि, विद्या यह एक ऐसा शस्त्र है जो शीलवान के पास होगा तो वह दूसरों की रक्षा करेगा पर वह इन्सान अगर शीलवान नहीं है तो वह उसी विद्या के द्वारा दूसरों का घात करेगा।
4. डॉ. अंबेडकर ने भारतीय समाज में स्थित जाति प्रथा, अंधश्रध्दा, वर्ण व्यवस्था, स्पृश्य–अस्पृश्य को भेद इन सबका विरोध कर शिक्षा के माध्यम से इनमें सुधार भी लाने का प्रयास किया।
5. महिलाएँ पढेगी जिससे देश का विकास होगा और उनकी अस्मिता का भी विकास होगा। आप भी इन्सान हो इसकी आपको पहचान होगी क्योंकि शिक्षा यह बाघीण का दूध है जो पियेगा वो गुर्रायेगा जरूर ऐसा बाबासाहब का मानना था।
6. मानव समाज को अपमानित करने वाली और देश को दुबला बनाने वाली अन्यायपूर्ण रचना को बदलने के लिए शिक्षा यही एक क्रांति की सही पहल होगी ऐसा डॉ. बाबासाहब को लगता था।

संदर्भ सूची

1. चौहान सूरजपाल, "नया ब्राम्हण", पृ. क्र. 24
2. जटावा, "डॉ. बी. आर. आंबेडकर – एक प्रखर विद्रोही", पृ. क्र. 115
3. घोरमोडे के. यु. एवं घोरमोडे कला, "शैक्षणिक विचारवंत", पृ. 46–47
4. देसले मधुकर एवं थोरात गौतम (संपा.), "भारतीय राज्यघटनेचे शिल्पकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर" (गौरवग्रंथ), पृ. क्र. 68
5. शोधदिशा (विश्वस्तरिय त्रैमासिक पत्रिका)
6. डॉ. आंबेडकर गौरवग्रंथ (125 वी जयंती – 14 जुलाई 2015)